या वारीस

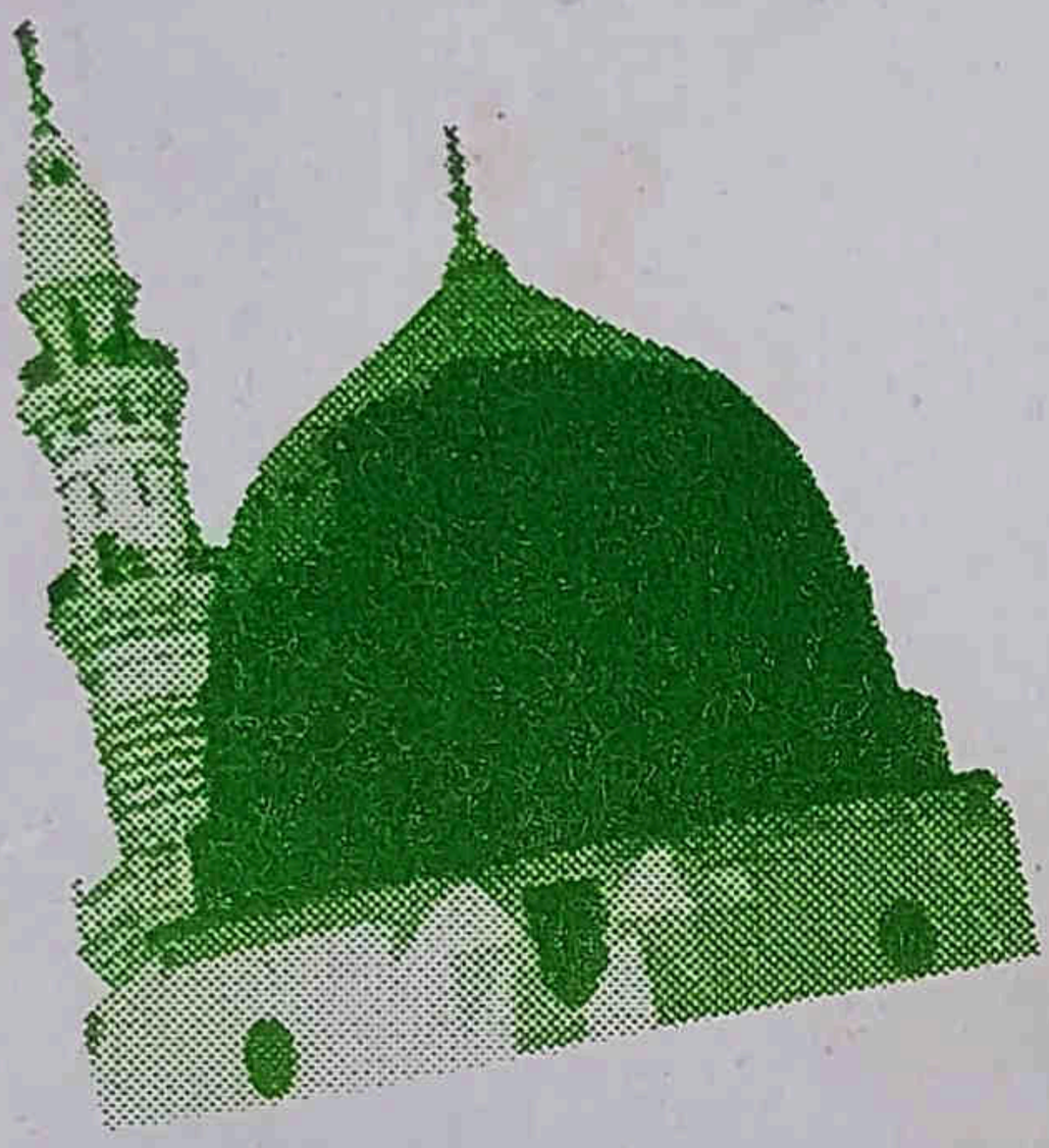

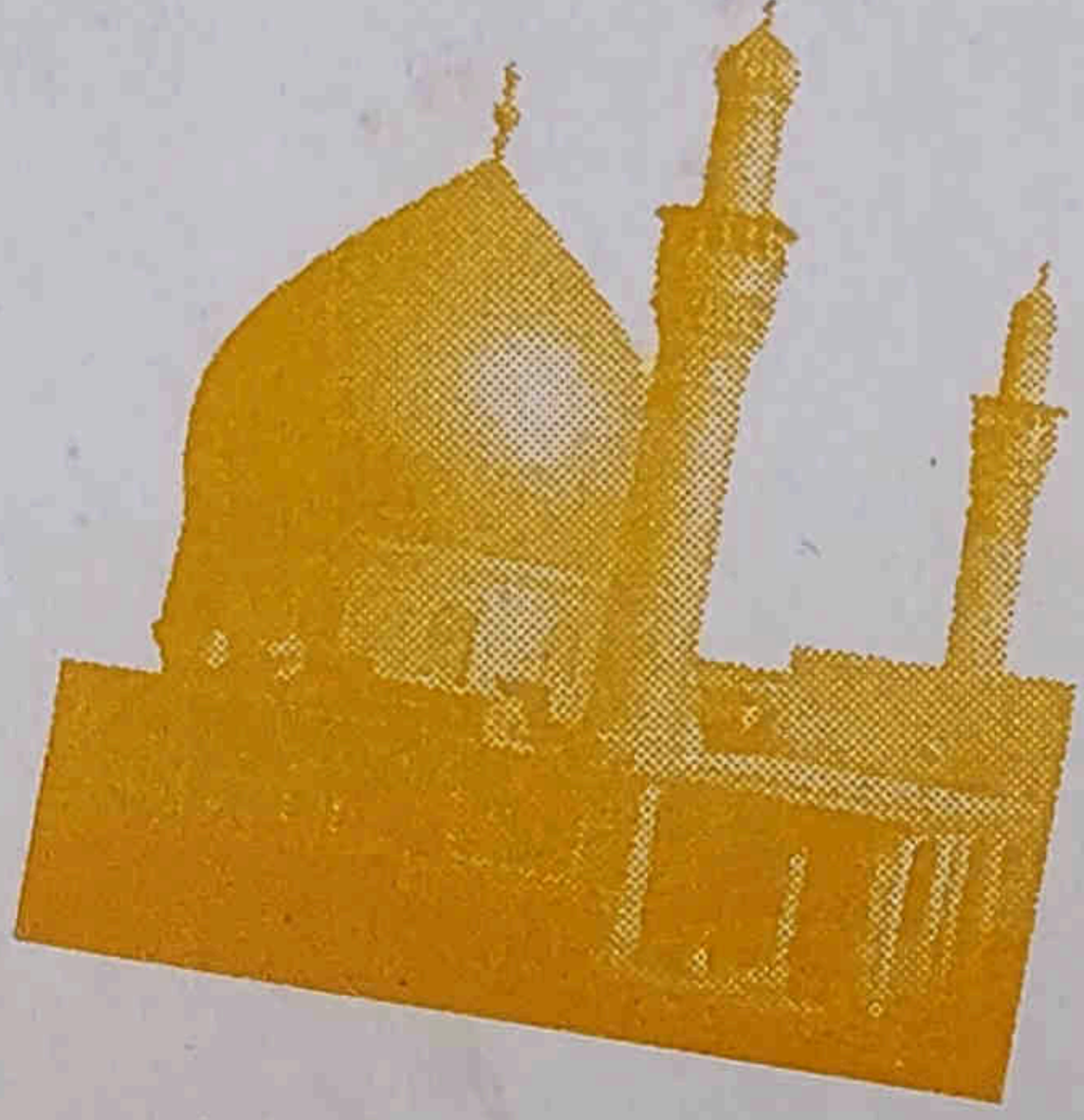

उन पे

अरबों सलाम

: मुसन्नीफ :

हाजी सिद्दीकअली शाह वारसी

उनपे अरबों सलाम

: मुसन्नीफ :

अलहाझ सिद्दीकअली शाह "वारसी" पेटलादी
(खाक पाए सगाने कूए हजरत हाजी वारिसपाक आजम अल्लाह झिक्ररहु)
(दरगाह शरीफ हजरत हाजी अलीहैदर शाह वारसी कुद्दुसुर्रहु)
वारसी रोड, पेटलाद शरीफ (गुजरात)
(बानीए दरगाह शरीफ हाजी अली हैदरशाह वारसी कुद्दुसुर्रहु पेटलाद)

नाम मजमुआ : उनपे अरबों सलाम
नाम मुसन्नीफ : हाजी सिद्दीकअली शाह "वारसी"
मतबआ प्रेस : प्राइम प्रिन्टर्स, धर्मज.
सनए ईशाअत : डीसेम्बर – २०१६
तआदाद : ५०० कोपी हदीया :–

जुमला हकूक बहक पब्लीशर महेफुझ है

: मीलने का पता :
दरगाह शरीफ हझरत हाजी अलीहैदर शाह वारसी कुद्दुसुर्रहु,
वारसी रोड, पेटलाद शरीफ
और
मद्रस–ए–वारसीया. वारसी महोल्ला पेटलाद (गुजरात)

शाये कर्दा : हाजी सिद्दीकअली शाह "वारसी"
दिलशाद हुसैन "वारसी"

★★★ पेश लफज ★★★

मोहतम जनाब

हाजी सिद्दीकअली शाह वारसी साहब आपका "उनपे अरबों सलाम" किताब का पेश लफज लिखना बहोत मुश्कील है फिर भी कौशिश की.

जनाब हाजी सिद्दीकअली शाह वारसीको में बीस सालसे जानता हुँ. जनाब हाजी सिद्दीकअली शाह वारसीने जनाब हजरत हाजी मजहरअली शाह "शाद" वारसी से कुर्आन और ऊर्दु की तालीम ली. और १३ अगस्त १९७९ हजरत हाजी मजहरअली शाह "शाद" वारसी और जनाब हाजी अली हैदरअली शाह 'वारसी' के जरीए उन्हें एहराम मिला और उन्की सोबतसे शेरो शायरी का शौक पेदा हुआ.

आपकी पहेली किताब १९९० "यादे हुसैन" शाये हुई । उस बाद "जश्ने विलादत – जन्नत की सनद", "करम की बहार", "ईश्के हुसैन", "मदीने की बहार" और "बहारे वारिस" शाये हुई है ।

अब सातवी किताब "उनपे अरबों सलाम" शाये हो रही है । ईस किताब को पढकर बहोत लुतफ आएगा और हर शेर को पढ़ने वाला और सुनने वाला रसूले खुदा और ईमाम आली मकाम की याद में और ईश्क में तल्लीन हो जाएगा ।

अल्ला तआला सरकारे दो आलम (स.अ.व.स.) व पंजतन पाक और वारिसे पाक के सदके और तुफेल मैं ईस "उनपे अरबों सलाम" किताब को कुबुलीयते आम अता फरमाए. आमीन

जफरखान ए. पठान
प्रेस रीपोर्टर
पेटलाद शरीफ

शहीदे करबला सुल्तानें करबला

★ अरबों सलाम ★

दीन के शब्बीरो शब्बर पे अरबो सलाम
फातेमा के वो दिलबर पे अरबों सलाम

हश्र तक दिल हमारा ये कहता रहे
करबला के वो सरवर पे अरबों सलाम

जिसकी सूरत रसुले खुदा जैसी थी
ऐसी शकले पयम्बर पे अरबों सलाम

एकने कासीम दिया एकने अकबर दिया
ऐसे शब्बीरो शब्बर पे अरबो सलाम

रोशनी दीन में जिससे कायम हुई
ऐसे शाहे मुन्नवर पे अरबों सलाम

खुद रसूले खुदा प्यार जिससे करें
ऐसे जाने पयम्बर पे अरबों सलाम

आपके ये गुलामों की है एल्तेजा
आपके देखो घर घर पे अरबों सलाम

अश्क आँखों से मेरी नही रूकते हैं
ऐसे मासुम असगर पे अरबों सलाम

देखो जन्नत से आये हैं दोनो के नाम
फातेमा जहेरा हैदर पे अरबों सलाम

जिसकी उंगली से खैबर का दर उठ गया
फातहे देखो खैबर पे अरबों सलाम

जब से मकतल में काबा हुआ है शहीद
ऐसे उस जिस्मे अतहर पे अरबों सलाम

करबला में जो शाहने खुत्बा दिया
करबला के वो मिम्बर पे अरबों सलाम
बीबी जैनब के औनो मोहम्मद को भी
ऐसे मासुम निडर पे अरबों सलाम
सारे आलम में जिसकी महेक आती है
करबला के गुलेतर पे अरबों सलाम
जिस हुसैनी की आँखों से अश्क बहे
ऐसे हर चश्मए तर पे अरबों सलाम
दीने अहेमद पे असगरो अकबर कटे
ऐसे असगरो अकबर पे अरबों सलाम
जिसने अकबर दिया जिसने असगर दिया
दीन के ऐसे दिलावर पे अरबों सलाम
दुश्मने दीन भी जिससे थर्रा गये
शाह के ऐसे तेवर पे अरबों सलाम
देखो पेटलाद के "वारसी" ये कहे
दोनो आलम के सरवर पे अरबों सलाम
रातो-दिन जिससे रोशन हुए "वारसी"
ऐसे शम्सो कमर पे अरबों सलाम
"वारसी" दोनों आलम में कौन ऐसा है
वो हुसैन ईब्ने हैदर पे अरबों सलाम

★ सलाम ★

जन्नतें करती है लख्ते दीले हैदर को सलाम
प्यारे अकबर उसी मासुम से असगर को सलाम
करबला वालोंने है हक को बचाया देखो
कासीम, अब्बास, हुसैन औ है अकबर को सलाम

अपनी उम्मत के लिये सर को कटाया जिसने
सारी उम्मत की तरफ से उसी रेहबर को सलाम

जिसने कुरबान किया हक़ पे घराना अपना
करबला के उसी देखो दिलावर पे सलाम

दोनो आलम में बड़ी शान उन्हीं की देखी
फातेमा ज़हेरा के देखलो सब घर को सलाम

दोनो आलम में येही घर तो हमें प्यारा है
हसन हुसैन अली फातेमा के घर को सलाम

दिल-जीगर आँखें ये सर भी झुका दो अपना
खुदा के देखो तो वो प्यारे पयम्बर को सलाम

करबला के ही नही हैं दोनो जहाँ के मालीक
दोनो आलम के है जो बस उसी सरवर को सलाम

मुस्तफा ने जिसे सीने से लगा रखखा
मुस्तफा के वोही शब्बीरो और शब्बर को सलाम

मीट गयी देखलो अकबर की जवानी रन में
सबकी जानीब से वोही शक्ले पयम्बर को सलाम

दूध तो मील न सका पानी भी न जिसको मिला
करबला के उसी मासुम से असगर को सलाम

हसन का लाल भी शेह पे मेरे कुरबान हुआ
वोही कड़ियल जवाँ कासीम से दिलावर को सलाम

अपने नाना की जो उम्मत को बचा लाया है
करबला के उसी देखलो रहेबर को सलाम

फातेमा और अली जाने पयम्बर भी वो
दो ज़हाँ के उसी देखलो सरवर को सलाम

उम्मते आँसी हर एक दिल से कहा करती है
करबला में सभी वो देखो बहत्तर को सलाम

शहरे पेटलाद के हर देखो हुसैनी ने कहा
हर हुसैनी के वो देखिये रहेबर को सलाम

शहरे पेटलाद के लो "वारसी" भी कहते हैं
दिल-जीगर से वो कहे वो शहे अतहर को सलाम

"वारसी" सर को झुका शेह की ईसी चौखट पे
फीर जुबाँ से येही कह दे शहे हैदर को सलाम

हक पे कुरबान हुवा जाने पयम्बर देखो
"वारसी" ने भी कहा जाने पयम्बर को सलाम

हश्र तक "वारसी" निस्बत तेरी आका से रहे
दिल से कह दे ये वो शहे महेशर को सलाम

हश्र में प्यास तेरी "वारसी" बुझ जायेगी
प्यास तेरी भी कहेगी वो शहे कौशर को सलाम

★ सलाम ★

ऐ अली के लाडले ऐ शहीदों के ईमाम
या हुसैन इब्ने अली आपको लाखों सलाम
या हुसैन इब्ने अली....

आपके जैसा जहाँ में कोई भी देखा नही
फातमा के लाड़ले पाया है जो तुमने मकाम
या हुसैन इब्ने अली....

हो करम महेशर में हम पे या हुसैन इब्ने अली
अपने नानाजान से पीलवाइए कौशर के जाम
या हुसैन इब्ने अली....

दर बदर कब तक फिराओगे मेरे मौला मुझे
हो शुकूँने दिल अता मुझको इमामों के इमाम
या हुसैन इब्ने अली....

आपके जल्वों से रोशन है हुसैन इब्ने अली
माहो-अंजुम कह कशाँ और ये माहो तमाम
या हुसैन इब्ने अली....

आपके रूत्बे के आगे अरशो-कुर्सी कुछ नही
दोसे अहेमद पे रहा है आपका उँचा मकाम
या हुसैन इब्ने अली....

जिन्दगी भर बस यूँही आता रहूँ जाता रहूँ
सर झुकाने आपकी चौखट पे और करने सलाम
या हुसैन इब्ने अली....

आपका जल्वा दिखा दो "वारसी" को आपके
आपके दर पे है आया आपके दर का गुलाम
या हुसैन इब्ने अली....

हाज़ीरे दरबार है देखो तुम्हारा "वारसी"
अब हुसैनी रंग में रंग दीजिए आली मकाम
या हुसैन इब्ने अली....

★ सलाम ★

फातेमा के दुलारे सलामुन अलैक
बेकशों के सहारे सलामुन अलैक
बहते दरिया के धारे सलामुन अलैक
कह रहे हैं कनारे सलामुन अलैक
आपसा कोई दुनियाँ में सरवर नही
तुम हो सबके सहारे सलामुन अलैक

डूब ही जाती कश्ती ये इस्सलाम की
तुमसे लागी कनारे सलामुन अलैक
आपकी रोशनी सारे आलम में है
बुतुराबी सितारे सलामुन अलैक
ऐसा मन्ज़र जहाँ में नही है कहीं
करबला के नज़ारे सलामुन अलैक
सारी दुनियाँ को हक का सबक दे गये
तुम हो कुरआन के पारे सलामुन अलैक
अपने दर पे बुलाया हमें आपने
भाग जागे हमारे सलामुन अलैक
आपके दर पे आया है ये "वारसी"
मुस्तफा के लो प्यारे सलामुन अलैक

★ सलाम ★

सुल्ताने करबला को हमारा सलाम हो
दिलदारे फातेमा को हमारा सलाम हो
दरिया पे जिसने पानी का कतरा नही पीया
वो प्यासे पेशवा को हमारा सलाम हो
जिसके गले को चुमा था प्यारे रसुल ने
वो जाने मुस्तफा को हमारा सलाम हो
जो चाहा हमने पाया है आका हुसैन से
सरवर की हर अता को हमारा सलाम हो
शब्बीर के रोज़े से जो आयी है लीपट के
करबल की इस हवा को हमारा सलाम हो
कश्ती ये दिने हक़ की बचायी हुसैन ने
ये ऐसे नाखुदा को हमारा सलाम हो

ज़हेरा अली हुसैनो हसन के ही साथ साथ
सरदारे दो जहाँ को हमारा सलाम हो
हर वक्त "वारसी" ये ही कहते रहेंगे हम
जहेरा के दिलरूबा को हमारा सलाम हो

★ सलाम ★

फातहे करबला अस्सलाम अस्सलाम
जाने खैरूलवरा अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

फातेमा की ज़ीया अस्सलाम अस्सलाम
ज़ोरे शेरे खुदा अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

अर्श भी रो उठा फर्स भी रो उठा
उनपे खंजर चला अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

जिनके नाना नबी जिनके बाबा अली
उनका ये मरतबा अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

अपने नाना की उम्मत बचायी गयी
खुने असगर बहा अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

बच गया देखिए दीने ईसलाम भी
ऐसा सजदा किया अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

मीट गयी शक्ले अहेमद जो अकबर कटे
ऐसा नेज़ा लगा अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

जब अलमदार पानी को लेने गये
उनका बाजु कटा अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

आज करबल में सारे हुए है शहीद
कुम्बये फातमा अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

उनकी आँखों से आँसू रवाँ हो गये
किस्सये करबला अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

आपकी नस्ल पर आपकी ज़ात पर
सैयदा फातेमा अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

आपही देते हैं आपही दीजिए
दरदे दिल की दवा अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

रहेती दुनियाँ तलक ना कोई कर सके
ऐसा सब्र किया अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

आपका हो करम आपकी हो अता
या शहे मुस्तफा अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

"वारसी" तुने रो-रो के हसनैन को
सर झुका के कहा अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

"वारसी" आपकी शान में जो कहे
आपकी है अता अस्सलाम अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम
अस्सलाम अस्सलाम या हुसैन अस्सलाम

★ सलाम ★

करबल के जाने वालों हमारा सलाम लो
मदनी घराने वालों हमारा सलाम लो

लो याद आ रही है वो कासीम की जवानी
प्यारे हुसैन की थी ये ही दुनियाँ में निशानी
सुखा गला था और था बस सामने पानी
पानी ना पीलाने पे ये दुनियाँ थी दिवानी
सर के कटाने वालों हमारा सलाम लो...

जैनब के दोनो लाल भी कुरबान हो गये
मैदाने करबला में ये दोनो ही खो गये
पायी शहादत चैन से तो दोनो सो गये
यूँ उम्मते आँसी के गुनाह एक पलमें धो गये
कुरबान जाने वालों हमारा सलाम लो...

बाली सकीना कहेती थी अब्बास से जाकर
चाचा पीला दो मुझको बी पानी ज़रा लाकर
अब्बास चले पानी का मश्कीजा उठा कर
दरिया की तरफ अपने वो घोडे को बढ़ाकर
बाजु कटाने वालों हमारा सलाम लो...

करबल की ज़मीं पे पडा अकबर जवान है
प्यारे हुसैन की ये ही देखो तो जान है
शक्ले पयम्बरी की भी क्या आन बान है
जैसे जमीं पे रख्खा हुआ एक कुरआन है
उम्मत बचाने वालों हमारा सलाम लो...

सूखे गले पे तीर जब असगर के चला है
छेह माह का नन्हा बच्चा तो नाज़ो से पला है
मासुम तीर खा के ना फिर देखो हिला है
पायी शहादत और फिर ये सूखा गला है
हिम्मत दिखाने वालों हमारा सलाम लो...

जैनब सँभाले रहेना तूँ ये दीन का परचम
चेहरे से नमुदार न हो एक भी ये ग़म
कुफ्री से लड़ूँगा मैं जब तक है दम में दम
सब हाल अपने नाना से जाकर कहेंगे हम
सर के कटाने वालों हमारा सलाम लो...

करबल की ज़मीं पे ये देखो तो क्या हुआ
हर सिम्त कोई देखे तो महेशर बपा हुआ
कोई न कह सकेगा के सजदा कज़ा हुआ
दुनियाँ जिसे न भुले वो सजदा अदा हुआ
दीं के बचाने वालों हमारा सलाम लो...

दोनो जहाँ के आका हैं और मुस्तफा का चैन
हैदर का है शुकूँन वो ही मुरतजा का चैन
धड़कन थी दिल को और वोही फातमा का चैन
सब औलिया का और सभी अम्बिया का चैन
मदनी घराने वालों हमारा सलाम लो...

खंजर चला जो हल्क पे तो रोये नज़ारे
उस वक्त रोये दरिया के वो सारे कनारे
आँसु बहा उठे हैं ये काबे के मिनारे
रोने लगे कुरआन के ये तीसों भी पारे
सर के कटाने वालों हमारा सलाम लो...

है याद हमको रखना शहादत हुसैन की
ता उम्र तक रहेगी अकीदत हुसैन की
महेशर तलक ना छुटे मोहब्बत हुसैन की
ये ज़िन्दगी तो मेरी है दौलत हुसैन की
वादा निभाने वालों हमारा सलाम लो...

मुश्कील में तेरे काम ये आयेंगे "वारसी"
महेशर में बख्शवायेंगे तुझको भी "वारसी"
जन्नत में साथ उनके तुँ जायेगा "वारसी"
हर हर हुसैनी को ये शीखायेगा "वारसी"
दीं के बचाने वालों हमारा सलाम लो...

★ सलाम ★

मेरे हुसैन की ये शहादत को है सलाम
करबल की देखो ऐसी इबादत को है सलाम
उम्मत से कितना प्यार था आका हुसैन को
आका हुसैन की ये मुहब्बत को है सलाम
घर को लुटा के आपकी उम्मत बचायेंगे
य ओरजु हुसन कैा हसिरत को है सलाम
पानी में ले के आता हूँ सबको पिलाता हूँ
अब्बास की ये देखलों चाहत को है सलाम
सबने पिया है जाम शहादत का देख लो
प्यारे रसुले पाक की निस्बत को है सलाम
उम्मत के भले के लिए सर को कटाऊँगा
मेरे हुसैन की तो ईस जुरअत को है सलाम
बैचैन दिल था और ये बे शुकूँन था
नामे 'हुसैन' से मिली राहत को है सलाम
सर नेज़े पे यज़ीदने देखो चढ़ाया था
नेज़े पे ऐसी देखो तिलावत को है सलाम
दौलत थी ये हुसैन की ये अकबरो असगर
मेरी तरफ से ऐसी दौलत को है सलाम

सर को कटा दिया मगर छोड़ी नही नमाज़
मेरे हुसैन की ये शरीयत को है सलाम
ऐ "वारसी" हुसैन ने सब कुछ लुटा दिया
आका हुसैन की ये सखावत को है सलाम
लीख दे कलम उठाके शहादत का वाकेया
ऐ "वारसी" हुसैन की निस्बत को है सलाम

★ मनकबत ★

करबला तो जन्नत है करबला तो जन्नत है
करबला की बातों से दिल को मेरे राहत है
करबल की बातों पे अश्क हम वहायेगें
उसकी देखो यादों से दिल को हम लगायेगें
करबला की बातों में देख लो सुजाअत है
करबला तो जन्नत है करबला तो जन्नत है
दुश्मनाने करबल को आज ये दीखायेगें
उनके ग़म से ईस दिल को आज हम सजायेगें
उनका ग़म मेरे दिलमें देखो एक दौलत है
करबला तो जन्नत है करबला तो जन्नत है
दीन देखो मिट जाता होती जो ना करबला
फिर जहाँ में कलमा ये कोई भी नही पाता
मुस्तफा के प्यारों से बच गयी शरीअत है
करबला तो जन्नत है करबला तो जन्नत है
घर भी देखो लुटवाया सर भी देखो कटवाया
करबल में असगर भी देखो बच नही पाया
ऐसी देखो नाना से शाह को मुहब्बत है
करबला तो जन्नत है करबला तो जन्नत है

दिल की ये तमन्ना है करबला मैं जाउँगा
दिल की हर तमन्ना को अपनी मैं तो पाउँगा
मेरे टूटे दिल की तो एक येही हसरत है
करबला तो जन्नत है करबला तो जन्नत है

हश्र तक मेरे आका नाम तेरा गुँजेगा
नाम तेरा ले ले के हर कोई तो झुमेगा
सबसे आला शाह की देख लो शहादत है
करबला तो जन्नत है करबला तो जन्नत है

"वारसी" हंमेशा से मैंने ये तो देखा है
हर घड़ी करम उनका आप पर तो रहता है
करबला के आका से ऐसी उनको निस्बत है
करबला तो जन्नत है करबला तो जन्नत है

★ मनकबत ★

जानाने मुस्तफा को आवो बयाँ करें
वो शाहे करबला को आवो बयाँ करें
शेरे खुदा की शाँन थी करबल के शेर में
वो शेरे मुस्तुफा को आवो बयाँ करें
कस्ती हमारे दीन की पार कर गया
कस्ती के ना खुदा को आवो बयाँ करें
उनके करम की बात से हर दर्द मिट गया
उस नाम की दवा को आवो बयाँ करें
जिसकी शुजाअतो के चर्चे हैं हर जगह
वो दीन के पेशवा को आवो बयाँ करें
जो माँगा जिसने आपके दर से मिल गया
आका की इस अता को आवो बयाँ करें

अकबर की शक्ल देख के सब कूफी डर गये
अकबर में हम रसुले खुदा को बयाँ करे
ऐ "वारसी" दिल–जानो जिगर से ये बात कर
हसनैन की सना को आवो बयाँ करें

★ मनकबत ★

गुलशन की तुम बहार दुरूदो सलाम लो
हो मुस्तफा का प्यार दुरूदो सलाम लो

आका हुसैन आपके कहते हैं ये गुलाम
सब आप पर निसार दुरूदो सलाम लो

उम्मत रसुले पाक की बच जायेगी जुरूर
कर दोगे बेड़ा पार दुरूदो सलाम लो

इस पार के गुलाम पुकारे हैं बार–बार
आका मेरे उस पार दुरूदो सलाम लो

सौ बार भेजता हूँ तेरी ज़ाते आली पे
ये ज़िश्त में एक बार दुरूदो सलाम लो

नज़रे करम हुसैन की हम सब पे रहती है
हम सब की है पुकार दुरूदो सलाम लो

कश्ती पे या हुसैन मेरी देखो लिखखा है
कश्ती है आर–पार दुरूदो सलाम लो

हर एक दुखी को आपने दिल से लगा लिया
दुखियों के हो ग़मख्वार दुरूदो सलाम लो

ये "वारसी" को हर घड़ी तुमने नवाज़ा है
कर दो करम एक बार दुरूदो सलाम लो

★ मनकबत ★

हर वक्त हम तो याद शहादत को करेंगे
ज़िक्रे हुसैन जैसी इबादत को करेंगे
करबल में जो दीखायी है शब्बीर ने मेरे
हम याद देखो ऐसी शुजाअत को करेंगे
करबल से लेके देखना महेशर तलक रहे
हम ऐसी पुख्ता आपकी निस्बत को करेंगे
यादे हुसैन कोई मीटा ही नही सकता
हम आम देखो उनकी मुहब्बत को करेंगे
हर साँस में हुसैन की एक याद रहेगी
पेवस्त रूहमें इस तरहा राहत को करेंगे
निस्बत मेरे हुसैन की है मेरी ज़िन्दगी
इस तरहा देखो जीने की जुरअत को करेंगे
करबल से मीले "वारसी" जन्नत का रास्ता
आबाद हम भी देखना जन्नत को करेंगे

★ मनकबत ★

शब्बीर देखो नाना की उम्मत बचाकर ले गये
सजदे में एक ऐसी इबादत दीखाकर ले गये
उम्मते आँसी की देखो बन गयी बीगड़ी हर एक
आसियों की देखो वो किस्मत बनाकर ले गये
करबल में क्या हुवा कौन दे जा के खबर
खुँने हुसैन कबुतर उड़ाकर ले गये
करके शहीद शाह को जिस्मे अतहर छोड़ा है
देखो सरे मुबारक कुफी उठाकर ले गये

करबला में शाह के जब खूँन के कतरे गिरे
प्यारे नाना जान तो सारे उठाकर ले गये

करबल में घर का हर बच्चा शहादत पा गया
शाह फिर आँखों में हर आँसु छुपाकर ले गये

असगर को एक कतरा भी पानी नही मिला
असगर शहीद हो गये सरवर उठाकर ले गये

एक वादा शाहने नाना से अपने था किया
करबला में वोही वादा शाह निभाकर ले गये

मेरी चाहत शाह के कदमों में रख्खी जायेगी
"वारसी" भी अपनी चाहत को सजाकर ले गये

★ मनकबत ★

दिल का मेरे ब्वहार हुसैन इब्ने अली से
है मुझको देखो प्यार हुसैन इब्ने अली से

आका हुसैन देखना मुझको निभायेंगे
है येही इन्तेज़ार हुसैन इब्ने अली से

ईस पार से उस पार कभी जाऊँगा मैं भी
मील जाऊँगा उस पार हुसैन इब्ने अली से

दर पे रसुले पाक के दी मैंने ये सदा
करता हूँ बहुत प्यार हुसैन इब्ने अली से

बेचैनी मेरे दिळ की तो बढ़ती ही गयी है
है ईश्क जो सरकार हुसैन इब्ने अली से

हर शामों सहर रातो-दिन ये होता रहेगा
दिल का मिले हर तार हुसैन इब्ने अली से

कश्ती से मेरी दूर तो तुफान रहेता है
है मेरा बेड़ा पार हुसैन इब्ने अली से
दोनों जहाँ में "वारसी" तो कामयाब है
रखता है एतेबार हुसैन इब्ने अली से

★ मनकबत ★

दीने रसुले पाक की तूँ शान है हुसैन
दुनियाँ में मेरा देख लो ईमान है हुसैन
तूँ क्या मिटा सकेगा लईन शाने मुस्तफा
ये तो रसुले पाक की पहेचान है हुसैन
ये आपके हुसैनी तुम्हें याद करते हैं
उनके दिलों में आपका तो ध्यान है हुसैन
नाना के लिये सजदे में सर को कटायेंगे
कितना हसीन आपका अरमान है हुसैन
कुरआन की एक बात पे तो जान दे दी है
दुनियाँ में तो एक बोलता कुरआन है हुसैन
क्या हैं रसुले पाक अगर तूँ है जानता
देखो रसुले पाक की पहेचान है हुसैन
ये उम्मते रसुल तुम्हें याद रख्खेगी
ईस उम्मत पे तो आपका एहसान है हुसैन
ऐ "वारसी" इस्लाम पे न आँच आयेगी
इस्लाम पे तो देख लो कुरबान है हुसैन

★ मनकबत ★

शमसीर चली रन में लो दीन के सरदार की
क्या शान थी वो देखो उस सैयदे अबरार की

वो अर्श देखो काँपा थर्रा उठी ज़मी भी
ऐसी चमकी थी देखो उस शाह की तलवार की

कुफी कटे पड़े हैं हर सिम्त कोई देखे
कुफी न ताब लाये उस शाह के उस वार की

दीने रसुले पाक को जिसने बचा लिया
मिलती नही मिसाल कहीं उनके प्यार की

ज़हेरा के इस चमन की भला बात क्या करें
आती है मंहेक दुनियाँ में उनकी बहार की

कुफी का खाली वार गया शाह पे देख लो
ऐसी हे काट देख लो सरवर के वार की

सारे जहाँन में है मंहक ज़हेरा के फूल की
शोजीश चली गयी है ज़माने में खार की

अकबर हैं शक्ले मुस्तुफा जब रन में आये हैं
क्या शान करबला में थी उस शहसवार की

गरदन पे शेह के जिस घड़ी खंजर खा हुआ
कीमत नही रही कोई खंजर की धार की

करके शहीद शाह को कुफी है जब चले
आँधी उठी है देख लो गरदो गुबार की

हक़ की रज़ा पे छोटी सी एक नन्नीही जान है
क्या शान मैं बयाँ करू नन्हें निसार की

रोज़े अज़ल से "वारसी" शेह का गुलाम है
रखखेंगे देखो लाज मेरे एतेबार की

★ मनकबत ★

चलो चलें चलें चलें चलें करबला चलें
रूबरू हम देख लो शेरे खुदा चलें

करबल में देख लीजिए आली मकाम हैं
दोनों जहाँन में देखिये उनका ही नाम हैं
सारे जहाँन में देखिये उनका निज़ाम हैं
उस शाहे करबला पे तो लाखों सलाम हैं
चलों चलें चलें चलें....

शब्बीर तो कुरआन के पारों में मीलेंगे
दुनियाँ के हर चमन की बहारों में मीलेंगे
सारे हसीन देखो नज़ारों में मीलेंगे
देखो खुदा रसुल के प्यारों में मीलेंगे
चलों चलें चलें चलें....

दुनियाँ में एक बोलता कुरआन है हुसैन
दीने रसुले पाक की शान है हुसैन
तूँ ही रसुले पाक की तो जान है हुसैन
मेरा तो ईस जहाँन में ईमान है हुसैन
चलों चलें चलें चलें....

कश्ती के मेरे देखो कनारे हुसैन हैं
महेशर में मेरे देखो सहारे हुसैन हैं
किस्मत की मेरी देखो सितारे हुसैन हैं
दोनो जहाँन में मुझको तो प्यारे हुसैन हैं
चलों चलें चलें चलें....

आँसु बहाते देखना करबल को जायेंगे
अपनी ज़बी को आपके दर पे झुकायेंगे
सारी मुरादें आका से हम देखो पायेंगे
ये खाली झोली देखना भर भर के लायेंगे
चलों चलें चलें चलें....

हर बात मैं हुसैन की दिल से बयाँ करूँ
हर बात बा वजु करूँ जब भी जहाँ करूँ
उनके बयाँ से पाक मैं अपनी जुबाँ करूँ
देखो यहाँ करूँ के मैं देखो वहाँ करूँ
चलों चलें चलें चलें....

यादे हुसैन देख लो है ज़िन्दगी मेरी
ज़िन्दा हूँ इसलिए के ये है आशिकी मेरी
उनके ही दम कदम से है ये सादगी मेरी
उनके ही नाम पर है पली हर खुशी मेरी
चलों चलें चलें चलें....

उनके ही नाम से मेरी पहेचान हो गयी
उनके ही याद से देखो मेरी जान हो गयी
ये करबला तो जिने का अरमान हो गयी
ये ज़िन्दगी तो आप पे कुरबान हो गयी
चलों चलें चलें चलें....

शरमिन्दा पानी हो गया नहरे फुरात का
देखो कहाँ वजुद है कुफी की बात का
देखो मिज़ाज बदला है सब कायनात का
कितना बुलन्द मकाम है वो शेह की ज़ात का
चलों चलें चलें चलें....

पक्के हुसैन देख लो पेटलाद वाले हैं
है सारी दुनियाँ ज़ानती हम शाद वाले हैं
अपने हुसैने पाक से फरियाद वाले हैं
भुले न करबला को ऐसी याद वाले हैं
चलों चलें चलें चलें....

शह की गुलामी हम भी निभायेंगे "वारसी"
हम है गुलाम शह के बतायेंगे "वारसी"
करबल की राह चल के दीखायेंगे "वारसी"
ये बात हर किसी को शीखायेंगे "वारसी"
चलों चलें चलें चलें....

★ हुजुर स.अ.व. पर दुरूदो-सलाम ★

आमदे मुस्तफा पर दुरूदो सलाम
सरवरे अंम्बीया पर दुरूदो सलाम
दीने इस्लाम हर सिम्त छाया गया
दीन के पेशवा पर दुरूदो सलाम
हम सभी मिलके सारे ये भेजा करें
रब के खैरूलवरा पर दुरूदो सलाम
फर्श से अर्श तक नूर ही नूर है
ऐसे नूरे खुदा पर दुरूदो सलाम
मुस्तफा और अली ये हुसैनो-हसन
फातेमा सैयदा पर दुरूदो सलाम
जुल्मतें हट गयी उनके आने के बाद
नूर की इस ज़ीया पर दुरूदो सलाम
मुस्तफा के लियें बस धड़कता रहे
दिल की हर-हर अदा पर दुरूदो सलाम
आँसियों हर घड़ी ये ही पढ़ते रहो
वो शहे मुरतुजा पर दुरूदो सलाम
हर सुबह-शाम उनपे ये भेजा करो
अपने खैरूलवरा पर दुरूदो सलाम

दोनो आलम के आका तो मुख्तार हैं
रब के उस दिलरूबा पर दुरूदो सलाम
रब ने कुरआन में देखो फरमा दिया
ऐसे शमसुद्दोहा पर दुरूदो सलाम
खुद खुदा देखो कुरआन में ये कहता गया
मेरे बदरुददोज़ा पर दुरूदो सलाम
'वराफाना लका जीकरक' देखो रब ने कहा
ऐसी रब की अदा पर दुरूदो सलाम
आशिके मुस्तुफा देखो पेटलाद के
उनके लब और जुबां पर दुरूदो सलाम
"वारसी" आँसीयों पर है उनका करम
उनकी ऐसी अता पर दुरूदो सलाम

★ सलाम ★

शाहे अरब लो सलाम अब हमारा
दीन के दुखियों ने तुमको पुकारा....शाहे अरब लो
यासीन तुम हो त्वाहा भी तुम हो शमसुददुहा हो बदरूददुजा हो
नबीयों में आला मकाम है तुम्हारा....शाहे अरब लो
आमेनाबीबी के लखते जीगर हो आप ही आका शक्ले कमर हो
चाँद से बढ़के चेहरा तुम्हारा....शाहे अरब लो
बिगड़ी हुई है किस्मत बनावो बारे अलम से हमको छुड़ावो
चश्में करम का कर दो इशारा....शाहे अरब लो
झोली लीये आका दर पे खड़े हैं कदमों में आका तुम्हारे पडे हैं
शब्बीरो-शब्बर का दे दो उतारा....शाहे अरब लो
ऐसी नही कोई दोनो जहाँ में हाल करूँ क्या अपना बयाँ मैं
तुम बीन नही आका कोई हमारा....शाहे अरब लो

सारे जहाँ में मैं हूँ घुम आया दर-दर मैं भटका कुछ नही पाया
कोई नहीं मेरा तुम बीन खुदारा... शाहे अरब लो

नेअमत दुनियाँ की चाहत नही है मालो तमासे मुहब्बत नही है
आपके टुकड़ो पे करलुं गुजारा... शाहे अरब लो

मौजे हवादीस सर को उठाये आके बचालो डुब न जाये
कश्ती भंवर में है दूर है कनारा... शाहे अरब लो

बैठा है कबसे आस लगाके आपके दर पे "वारसी" आके
गुम्बदे सीज़रा का देखे नज़ारा... शाहे अरब लो

★ सलाम ★

ऐ खातिमें पयम्बर लेना सलाम हमारा
दोनो जहाँ के अफसर लेना सलाम हमारा

ऐ बानीये ज़माना जिस राह से तुम गुज़रे
कहते थे सारे पत्थर लेना सलाम हमारा

आला निसान तुम हो बाला निसान तुम हो
ऐ आमेना के दिलबर लेना सलाम हमारा

रौज़े पे आपके हम आये हैं हाज़री को
अल्लाह के ऐ दिलबर लेना सलाम हमारा

दीदारे पाक से भी हमको नवाज़ो आका
उम्मत के तुम हो रहेबर लेना सलाम हमारा

चश्में करम तुम्हारी हर पर रहे हमेशां
एक तुम हो मेरे रेहबर लेना सलाम हमारा

जिस राह से तुम गुज़रे उस राह के भी पथ्थर
कलमा पढ़कर तुम्हारा लेना सलाम हमारा

झोली है मेरी खाली भर दीजिए ऐ मौला
तुम दिल के हो दिलावर लेना सलाम हमारा

दिल को शुकूँन भी हो और रूह को तसल्ली
मिल जाये ऐ पयम्बर लेना सलाम हमारा

ख्वाजा निज़ाम साबीर वारीस अली के प्यारे
दुखियों के बन्दा परवर लेना सलाम हमारा

अकबर ये खुसरो बेदम हाफीज़ के या वली हो
इन सबसे मैं हूँ कम तर लेना सलाम हमारा

मैं तो नहीं हूँ कुछ भी ऐ खातिमें पयम्बर
नबीयों के तुम हो सरवर लेना सलाम हमारा

दरबारे अहमदी में ये "वारसी" है कहेता
ऐ आमेना के दिलबर लेना सलाम हमारा

★ सलाम ★

दोनों जहाँ के आका हमारा सलाम लो
रो-रो के कह रहें खुदारा सलाम लो
दोनों जहाँ के...

तुमने तो रहेमतों के समन्दर बहा दिये
बेजान पथ्थरों को भी कलमा पढ़ा दिये
हमसे गुनाहगारों का आका सलाम लो
दोनों जहाँ के...

चौखट पे हाज़री के लिए आ रहा हूँ मैं
आका बुला रहे हैं मुझे जा रहा हूँ मैं
उस दर पे जाके मैं तो कहुँगा सलाम लो
दोनों जहाँ के...

दीदार हम मदीने का करने को जाते हैं
दिल की तमाम हसरतें आका से पाते हैं
ये है तमन्ना आपसे मौला सलाम लो
दोनों जहाँ के...

तुम बीन नहीं है कोई मददगार या नबी
तुफाने ग़म से हमको करो पार या नबी
मजबुर गमज़दों का खुदारा सलाम लो
दोनों जहाँ के...

दर पे तुम्हारे आका आया है एक गरीब
कल तो बहुत दूर था आया है अब करीब
इस नातवाँ गरीब का दाता सलाम लो
दोनों जहाँ के...

हर हर कदम पे पढ़िये दुरूदो सलाम को
और याद करते जाइये खैरूल अनाम को
हर हर कदम पे तुमको पुकारा सलाम लो
दोनों जहाँ के...

★ सलाम ★

अल्लाह ही जाने उनका मकाम
शाहे अरब पे अरबो सलाम
जिनका लकब है खैरूल अनाम शाहे अरब पे अरबों सलाम

शाहे अरब की क्या शान है शाहे अरब की क्या आन है
दोनो जहाँ है उनके गुलाम शाहे अरब पे अरबों सलाम

ईशा मसीह मुसा कलीम दाऊद आदम और ये खलील
सफ में नबी सारे आका ईमाम शाहे अरब पे अरबों सलाम

सुब्हे नसीम ईत्ना तूँ कहना दुरी को आका मुश्कील है सहेना
रो-रो हर वक्त कहेता गुलाम शाहे अरब पे अरबों सलाम

सर पे हमारे हो दामाने रहेमत महेशर में आका करेंगे शकाअत
कौशर का हाथों में है जिनके जाम शाहे अरब पे अरबों सलाम

यासीन त्वाहा लकब जो पाया कुरआन में शमसुद्दोहा जो आया
कुरआन का हाँथों में जिनके निज़ाम शाहे अरब पे अरबों सलाम

ये अर्शो कुर्सी लोहो कलम ये हुरो गीलमा और आदम
अल्लाह भी देखो कहेता है आम शाहे अरब पे अरबों सलाम

"वारसी" मेरे शाहे उमम से फुला फला हूँ उनके करम से
भेजता हूँ उनपे मैं सुबहो शाम शाहे अरब पे अरबों सलाम

★ नाते पाक (स.अ.व.) ★

दर पे मुझे बुलाओ हसनैन के नाना
मुझको भी दर दिखाओ हसनैन के नाना

मैं बाग था बगीचा अब सहेरा हो गया हूँ
गुलशन मुझे बनाओ हसनैन के नाना

दर-दर भटका रहा हूँ दे दो मुझे सहारा
अब तो मुझे निभाओ हसनैन के नाना

आँखे तड़प रही हैं दिदार के लिए तो
पर्दा ज़रा हटाओ हसनैन के नाना

हर तरहा मेरी दुनियाँ देखो उजड़ गयी है
दुनियाँ मेरी सजावो हसनैन के नाना

मैं सर से पाँव तक तो डुबा हूँ हर गुन्हाँ में
अब कमली में छुपावो हसनैन के नाना

जन्नत है मेरी देखो एक आपका मदीना
जन्नत में अब बुलावो हसनैन के नाना

एक फातेमा का सदका झोली में मेरी डालो
किस्मत मेरी बनावो हसनैन के नाना

सुनशान है यह घर तो उजड़ा हुआ भी है
ईस घर को जगमगावो हसनैन के नाना
हर रात मेरी काली बेचैनियों में गुजरी
अब ख्वाब में भी आवो हसनैन के नाना
ज़हेरा अली का सदका मीले सदकये हसनैन
झोली मेरी भर जावो हसनैन के नाना
ये "वारसी" भी देखो करता है याद तुमको
तयबाह ईसे दिखावो हसनैन के नाना
ये "वारसी" की आँखें बे नूर हो रही हैं
जल्वा इसे दिखावो हसनैन के नाना

★ नाते पाक (स.अ.व.) ★

जश्ने हैं ये जश्न हैं जश्ने नौ बहार हैं
देखो इसी जश्न में मुस्तुफा का प्यार है
मुस्तुफा की आमद से दो जहाँ संवँर गये
उनकी देखो आमद पे हर कोई निसार है
हुरो गील्मा और फरिस्ते वज्द में हैं आ गये
सबकी देखो आँखों में,आज तो खुमार है
दो जहाँ में मुस्तुफा तो हर किसी को प्यारे है
देख लो खुदा का भी इस में तो शुमार है
भीख सब को मिलती है झोली भर दी जाती है
एक इस जहाँन में मुस्तुफा का दयार है
दिल को चैन आयेगा जब मदीना जावोगे
चैन और शुकून का वो ही एक दयार है
देखो मँहेक उठा है हर गली हर रास्ता
इस चमन में देख लो बहार ही बहार है

दर पे आके हैं खड़े कीजिये करम हुजुर
आशिकों की देखियें एक ही पुकार है

दुनियाँ कब्र हश्र में है सहारे आपके
आपका करम हुजुर देखो बारबार है

दो जहाँ में तुँ भी तो हो गया है कामयाब
दिल में तेरे "वारसी" मुस्तुफा का प्यार है

★ नाते पाक (स.अ.व.) ★

आमदे मुस्तुफा को मनायेगें हम
अपना घर अपना आँगन सजायेगें हम

उनके आने की खुशियाँ मनायेगें हम
देखो हर ग़म को अब भुल जायेगें हम

देखो अल्लाह का महेबुब आयेगा आज
राह में अपनी आँखें बिछायेगें हम

कोई रोके न टोके हमें देखीये
ज़ाते अहेमद से दिल को लगायेगें हम

सजदे ताज़ीम के सारे करने लगे
सर ये सजदे में देखो झुकायेगें हम

ऐशो ईशरत की हमको तो परवा नही
प्यार में उनके सब कुछ भुलायेगें हम

मालो ज़र की हमें कोई चाहत नही
दिल रसुले खुदा से लगायेगें हम

खाली झोली मदीने को लेकर चलो
भर के झोली मदीने से लायेगें हम

"वारसी" तेरे दिल की तमन्ना है जब
साथ में तेरे तयबाह को जायेगें हम

★ नामे पाक (स.अ.व.) ★

ये जश्न सारे मनाओ मोहम्मद आने वाले हैं
नबी की नातें सुनाओ मोहम्मद आने वाले हैं
गली ये कुचे सजाओ मोहम्मद आने वाले हैं
चराग घी के जलाओ मोहम्मद आने वाले हैं
ये सर को अपने झुकाओ मोहम्मद आने वाले हैं
न नज़रें अपनी उठाओ मोहम्मद आने वाले हैं
ये हुरो ग़ील्मा फरीश्ते भी सजदा रेज़ हुए हैं
ऐ ईन्साँ सर को झुकाओ मोहम्मद आने वाले हैं
ये अर्शो कुर्सी ये काबा जहाँ सजाया गया हैं
तुम अपने घर को सजाओ मोहम्मद आने वाले हैं
ये बनना और सँवरना खुदा भी देखो कहता हैं
के खुद को आला बनाओ मोहम्मद आने वाले हैं
खुदा के बास्ते महेशर का ग़म न कर अरे नादाँ
न आँसु अपने बहाओ मोहम्मद आने वाले हैं
रसुले पाक पे हम तो भरोसा देखो करते हैं
गुन्हाँ को भुल भी जाओ मोहम्मद आने वाले हैं
मुबारक सबको हो मेरे नबी के देखो आने की
ये दिल को दिल से मिलाओ मोहम्मद आने वाले हैं
ये रंजो ग़म ये मुसीबत ये मुश्कीलें हुई आंसाँ
न आँसु अपने बहाओ मोहम्मद आने वाले हैं
रसुले पाक की मीलाद का जश्न करो सारे
खुदा को अपने मनाओ मोहम्मद आने वाले हैं
जहाँ हो गया रोशन नबी की देखो आमद से
अँधरे सारे हटाओ मोहम्मद आने वाले हैं

ज़मी से अर्श तलक नूर ही देखो बरसता है
तुम ऐसे नूर में नहाओ मोहम्मद आने वाले हैं

निकालो बुग्ज़ो हसद क़ीनओ नफरत दिल से
गले हर एक को लगाओं मोहम्मद आने वाले हैं

किसी से दुश्मनी अच्छी नही है ऐ मेरे यारों
ये रन्जीशों को मीटाओ मोहम्मद आने वाले हैं

खुदा भी अपने मोहम्मद से देखो प्यार करता है
नबी को दिल में बसाओ मोहम्मद आने वाले हैं

नबी का चाहने वाला मेरा पेटलाद है देखो
शहेर में धुम मचाओ मोहम्मद आने वाले हैं

मेरे आठो–पहेर तो बस उन्हीं के प्यार में गुजरे
लो उनका प्यार निभाओ मोहम्मद आने वाले हैं

ये तुममें "वारसी" देखो उन्हीं का फैज़ दिखता है
ये नाँते पढ़कर सुनाओ मोहम्मद आने वाले हैं

खुदा ने दोनो जहाँ को सजाये देखो रखखा है
"वारसी" खुद को सजाओ मोहम्मद आने वाले हैं

★ नात शरीफ ★

मेरे दिल की है जो चाहत रहमतल्लील आलमीन
है मेरे दिल को जो राहत रहमतल्लील आलमीन

हर घड़ी बस आपको में याद करता रहूँ
हो मेरी बस यही आदत रहमतल्लील आलमीन

करबला में सर कटाया देख लो शब्बीरने
किसकी है ऐसी ईबादत रहमतल्लील आलमीन

आपकी बस एक अज़ाँ से एक सजदा वोह हुआ
बच गयी है सारी उम्मत रहमतल्लील आलमीन

करबला में देखिये सब घर का घर ही लुटा दिया
आपसे थी कितनी उल्फत रहमतल्लील आलमीन

आपही का ज़ीक्र हो मेरी ज़ुबाँ पे बार बार
ऐसी हो तुमसे मुहब्बत रहमतल्लील आलमीन

एक छोटी सी तमन्ना है मेरी शाहे अरब
हस्र में करना शफाअत रहमतल्लील आलमीन

गुम्बदे खिज़राँ को आँखों में बसाये मैं रहूँ
इस तरह होवे अकीदत रहमतल्लील आलमीन

सबको सीने से लगाना आप ही का काम था
थी ये क़ितनी. प्यारी आदत रहमतल्लील आलमीन

सबको जन्नत की तरफ देखना ले जायेगी
आपकी जो है शरिअत रहमतल्लील आलमीन

रातो-दिन बँटती देखी है आपके दरबार से
हमने वोह देखी सखावत रहमतल्लील आलमीन

ज़िन्दगी भर "वारसी" आका का दर छुटे नही
आपकी देखी वोह शफक़त रहमतल्लील आलमीन

★ ★ ★ ★

-: मुसन्नीफ की ईशाअतें :-

१. यादे हुसैन

२. जश्ने विलादत – जन्नत की सनद

३. करम की बहार

४. बचपन का प्यार

५. ईश्के हुसैन

६. मदीने की बहार

७. बहारे वारीस

८. उनपे अरबों सलाम
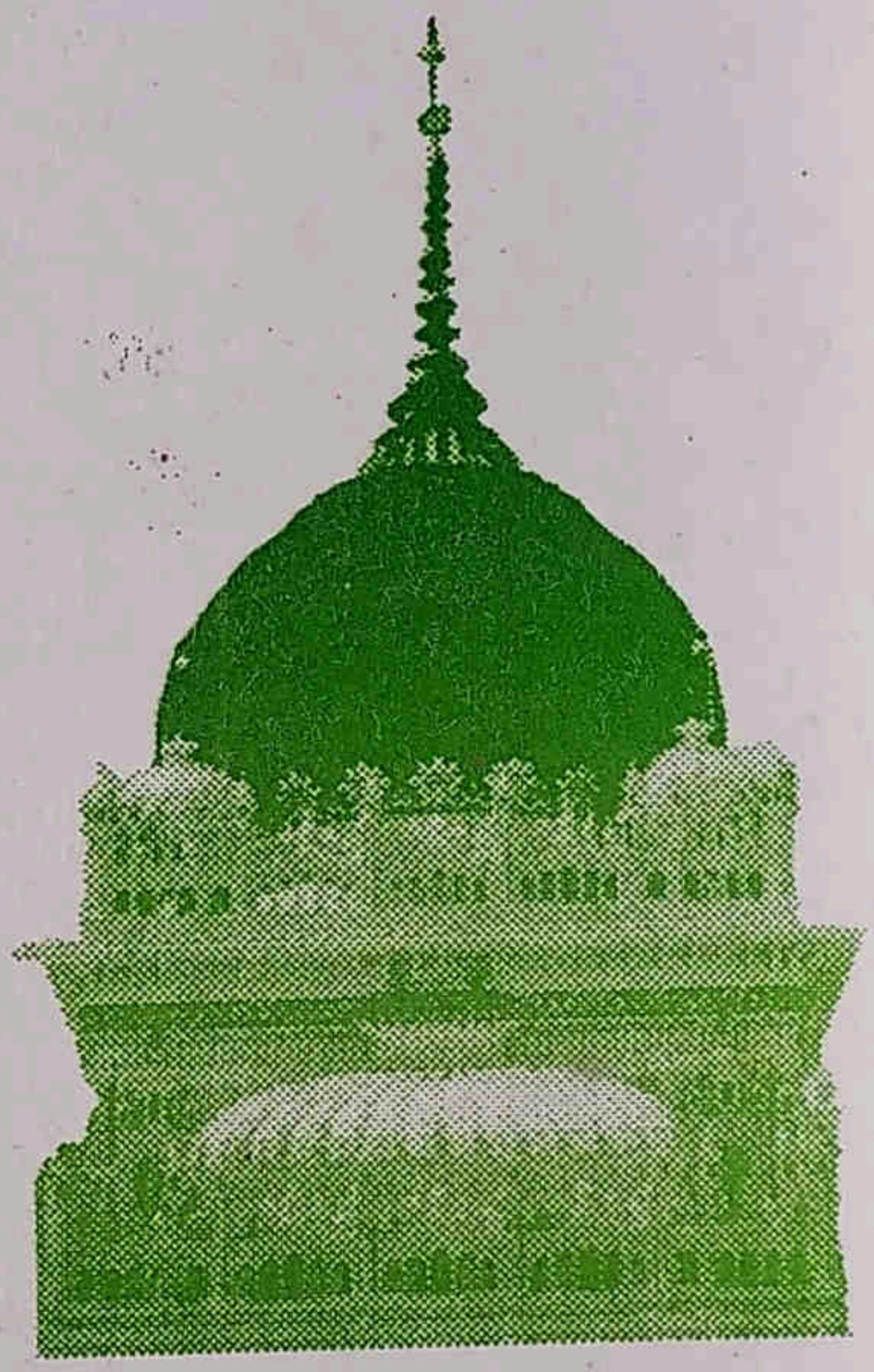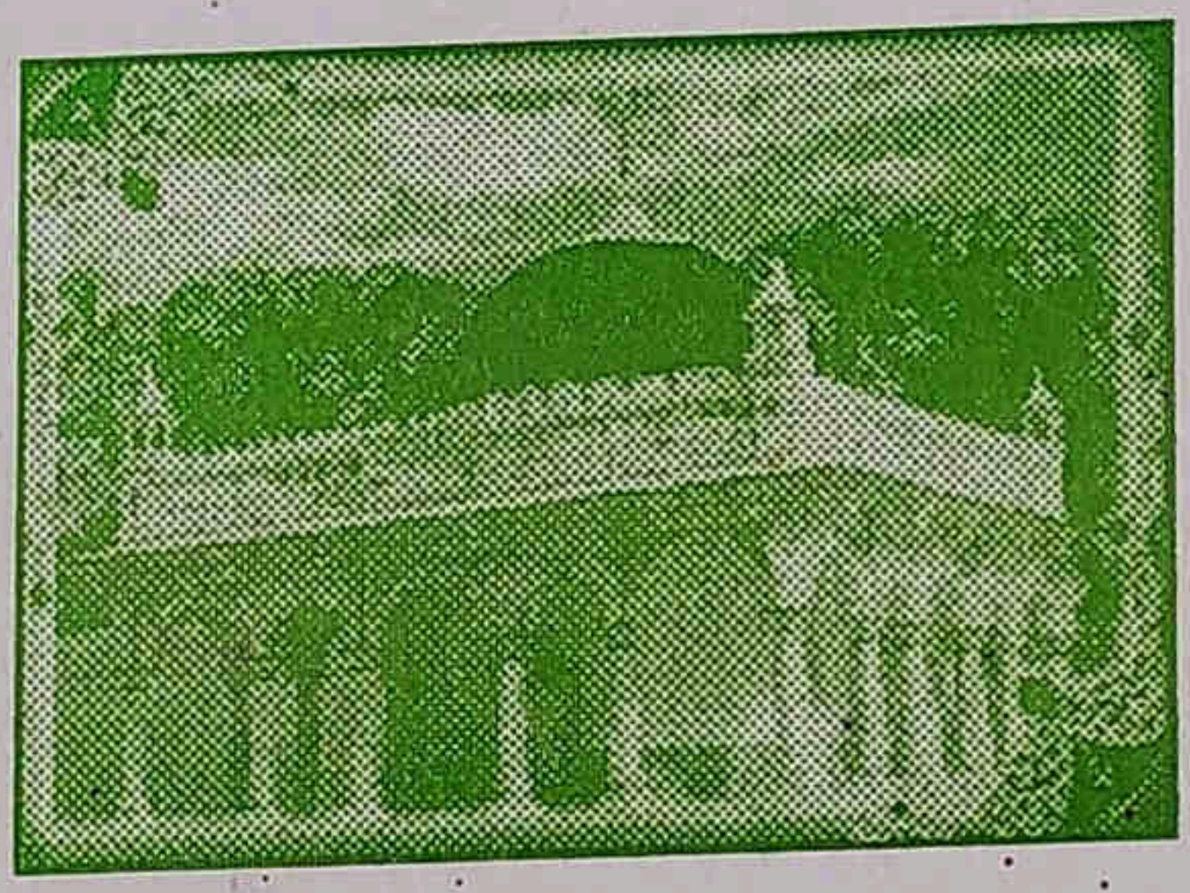
या वारीस